JRLA, 3(8), August, 2026: 175-179

Online ISSN: 3048-667X
CODEN (CAS, USA): JRLAB4
Impact Factor: 3.66

JOURNAL OF THE ROYAL LAUREATES ACADEMY
www.rlaindia.org

रामगढ की पहाड़ीः ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक धरोहर

डॉ जीवन लाल जायसवाल

इतिहास विभाग (अतिथि व्याख्याता)

सरदार वल्लभभाई पटेल शासकीय महाविद्यालय

कोतरी] जिला मुंगेली (छत्तीसगढ़), भारत

प्रस्तावना

छत्तीसगढ़ राज्य के सरगुजा जिले में स्थित रामगढ़ की पहाड़ियाँ भारतीय इतिहास पुरातत्व और साहित्य का एक अनूठा संगम स्थल हैं। यह न केवल अपनी भौगोलिक विशिष्टता के लिए जानी जाती हैं] बल्कि यह विंध्य पर्वतमाला की उन श्रृंखलाओं का हिस्सा हैं जो प्रागैतिहासिक काल से ही मानवीय गतिविधियों का केंद्र रही हैं। रामगढ़ की पहाड़ी समुद्र तल से लगभग 3202 फीट की ऊँचाई पर स्थित है। प्राकृतिक रूप से निर्मित यहाँ की गुफाएँ और सघन वन क्षेत्र इसे एक सुरक्षित आश्रय स्थल बनाते रहे हैं। प्राचीन काल में दुर्गम मार्ग होने के कारण यहाँ की कलाकृतियाँ और शिलालेख आज भी काफी हद तक सुरक्षित अवस्था में प्राप्त होते हैं। स्थानीय जनश्रुतियों में यह स्थान भगवान राम के वनवास काल का साक्षी माना जाता है। वनवास के दौरान दंडकारण्य क्षेत्र में प्रवेश से पूर्व राम, लक्ष्मण और माता सीता का यहाँ निवास करना इस क्षेत्र को धार्मिक पवित्रता प्रदान करता है।

रामगढ़ की पहाड़ी में दो ऐतिहासिक गुफा सीता बेंगरा और जोगीमारा गुफा है । सीता बेंगरा को विश्व की सबसे प्राचीन नाट्यशाला होने का गौरव प्राप्त है। इसकी संरचना यह सिद्ध करती है कि ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी में भी यहाँ सुव्यवस्थित कला और मंचन की परंपरा विद्यमान थी। जोगीमारा से मिले भित्ति चित्र और मौर्यकालीन ब्राह्मी लिपि के

Online ISSN: 3048-667X
CODEN (CAS, USA): JRLAB4
Impact Factor: 3.66

शिलालेख भारतीय चित्रकला के इतिहास में अजंता की गुफाओं से भी प्राचीन माने जाते हैं। विद्वानों का मानना है कि महाकवि कालिदास के विश्वप्रसिद्ध महाकाव्य 'मेघदूतम' की 'रामगिरि' कोई और नहीं, बल्कि यही रामगढ़ की पहाड़ी है। विरहणी यक्ष का संदेश लेकर जाने वाले बादलों का वर्णन और यहाँ की प्राकृतिक सुंदरता के बीच गहरा सामंजस्य दिखता है। मेघदूतम के पूर्वमेघ के आरंभिक श्लोकों में जिस 'रामगिर्याश्रमेषु' ,रामगिरि के आश्रमों का वर्णन आता है। जहाँ अलकापुरी से निष्कासित यक्ष ने अपना वनवास बिताया था। अनेक प्रतिष्ठित इतिहासकारों एवं साहित्यकारों जैसे डॉ. वेणकटेश रामकृष्ण, मिराशी, और डॉ. हीरालाल ने सिद्ध किया है कि वह 'रामगिरि' वस्तुतः सरगुजा का रामगढ़ ही है। भौगोलिक एवं प्राकृतिक साम्य, कालिदास ने मेघदूत में रामगिरि के जिन प्राकृतिक लक्षणों जैसे पवन–प्रेरितए जल–धाराएँ, गुफाएँ, घने जंगल और जलाशय का सजीव चित्रण किया है वे सभी रामगढ़ की पहाड़ी पर हूबहू घटित होते हैं।

जोगीमारा गुफा में मौर्यकालीन ब्राह्मी लिपि और पाली भाषा के शिलालेख प्राप्त हुए हैं। ये शिलालेख यह सिद्ध करते हैं कि यह क्षेत्र सम्राट अशोक के प्रभाव क्षेत्र में था। जोगीमारा के शिलालेखों में सुतनुका नामक देवदासी और देवदीन नामक कलाकार का वर्णन मिलता है। जोगीमारा का शिलालेख संभवतः भारत का सबसे प्राचीन लिखित लौकिक या प्रेम–साहित्य का साक्ष्य है। यह अभिलेख यह सिद्ध करता है कि ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी में धार्मिक ग्रंथों से इतर आम जनमानस की भाषा ;प्राकृत–पाली में भी भावात्मक और काव्य.शैली का साहित्य रचा जा रहा था। यह उस समय का मौर्यकालीन प्रशासनिक और सामाजिक ढांचे की भी झलक देता है। पुरातत्वविद् टी. ब्लॉक के अध्ययन 1904 के अनुसार इस नाट्यशाला का निर्माण ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी यानी मौर्य शासनकाल के दौरान हुआ था। भरतमुनि द्वारा रचित नात्यशास्त्र में जिस 'कुहरः नाट्यशाला का वर्णन मिलता है। यह इस बात का जीवित प्रमाण है कि भारत में ईसा से कई शताब्दियों पूर्व नाट्यशास्त्र के नियमों के अनुसार रंगशालाओं का निर्माण होता था।

जोगीमारा गुफा में भारतीय चित्रकला के सबसे प्राचीन साक्ष्य उपलब्ध हैं। गुफा की छत को पहले चूने के पतले लेप से समतल किया गया। इसके बाद गीले प्लास्टर पर प्राकृतिक रंगों का उपयोग करके चित्र उकेरे गए चित्रों में मुख्य रूप से लाल,सफेद, पीले और काले रंगों का प्रयोग किया गया है। चित्रों में उड़ते हुए गंधर्व, नर्तक.नर्तकियाँ, वृक्ष, हाथी, मकर, और ज्यामितीय आकृतियों को दर्शाया गया है। एक दृश्य में एक नर्तकी को वृक्ष के नीचे विश्राम करते हुए और संगीत मंडली को वाद्ययंत्र बजाते हुए उकेरा गया है, जो तत्कालीन सामाजिक–सांस्कृतिक जीवन को रेखांकित करता है।

सीताबेंगरा गुफा का निर्माण प्राकृतिक गुफा को काट कर किया गया है। इसका स्थापत्य यूनानी और भारतीय नाट्य कला शैलियों का एक अनूठा संगम प्रस्तुत करता है गुफा के भीतर प्रवेश द्वार के सामने एक समतल मंच बना हुआ है, जहाँ कलाकार अपनी प्रस्तुति देते थे। मंच के सामने पत्थर को काटकर सीढ़ीदार पंक्तियाँ बनाई गई हैं। ये सीढ़ियाँ अर्धवृत्ताकार रूप में हैं, ताकि दर्शक किसी भी कोने से मंच को स्पष्ट रूप से देख सकें। यहाँ लगभग 50 से 60 दर्शकों के एक साथ बैठने की व्यवस्था है। गुफा की बनावट इस तरह की है कि मंच पर बोली गई बात या गाया गया गीत पूरी

Online ISSN: 3048-667X
CODEN (CAS, USA): JRLAB4
Impact Factor: 3.66

नाट्यशाला में गूँजता है। प्राकृतिक प्रतिध्वनि के लिए गुफा के किनारों और प्रवेश द्वार पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण से कट लगाए गए हैं। मंच के दोनों ओर छोटे कक्ष बने हैंए जिन्हें कलाकारों के वेशभूषा बदलने और साज.सज्जा के लिए उपयोग किया जाता था।

इसके अतिरिक्त, हाथी पोल एक प्राकृतिक सुरंगनुमा विशाल गुफा है, जिसकी लंबाई लगभग 180 फीट है। इसकी ऊँचाई इतनी है कि प्राचीन काल में इसमें से होकर एक पूर्ण वयस्क हाथी आसानी से निकल सकता था, इसीलिए इसे 'हाथीपोल' कहा गया । इसके भीतर से एक प्राकृतिक जलधारा बहती है, जो इसके भूदृश्य स्थापत्य को मनोरम बनाती है।

वस्तुतरू, जनजातीय समाज में इतिहास का संरक्षण लिखित ग्रंथों में नहीं बल्कि पीढ़ियों से चली आ रही लोक–गाथाओं और गीतों में होता है। वाल्मीकि रामायण से अलग सरगुजा की जनजातियों की अपनी 'लोक–रामायण' है। जनजातीय वाचिक परंपरा में रामगढ़ की गुफाओं को भगवान राम का विश्राम स्थल माना जाता है। जनजातीय गीतों में रामए सीता और लक्ष्मण को किसी अलौकिक देवता के रूप में नहीं बल्कि अपने ही वनवासी समाज के एक आत्मीय सदस्य के रूप में गाया जाता है। छत्तीसगढ़ी लोक.गाथा 'पंडवानी' और स्थानीय सरगुजाही लोक–कथाओं में रामगढ़ और आसपास के घनघोर जंगलों ;दंडकारण्य के किस्से सुनने को मिलते हैं। इनमें पांडवों के अज्ञातवास और कौरवों से रक्षा हेतु इन दुर्गम पहाड़ियों के उपयोग का वर्णन मिलता है।

सरगुजा अंचल में घरों की मिट्टी की दीवारों पर बनाई जाने वाली रजवार कला में प्रकृति पशु–पक्षी और देवी.देवताओं के आकृतियों की जो बनावट दिखती है, उसका सीधा वैचारिक संबंध रामगढ़ की शैल.कला और जोगीमारा के चित्रों से जोड़ा जाता है। जनजातीय समाज ने बिना किसी आधुनिक तकनीक के इन प्राचीन गुफाओं और शैल–चित्रों को अपनी धार्मिक मान्यताओं के माध्यम से सदियों तक सुरक्षित रखा है। वे इन्हें 'दहकों' या 'देव–चित्र' मानकर इनकी पवित्रता बनाए रखते हैं।रामगढ़ की पहाड़ी जनजातीय जीवन दर्शन ष्प्रकृति ही ईश्वर हैष् का प्रतीक है।जब भी बाहरी आक्रमणकारियों या औपनिवेशिक शक्तियों ;अंग्रेजों ने सरगुजा पर दबाव बनाया यहाँ की पहाड़ियों और वनों ने जनजातीय योद्धाओं के लिए एक प्राकृतिक किले का काम किया। रामगढ़ के जंगलों में पाई जाने वाली दुर्लभ जड़ी–बूटियों का ज्ञान यहाँ के पारंपरिक वैद्य ;बैगा,गुनिया अपनी भावी पीढ़ियों को मौखिक रूप से हस्तांतरित करते आए हैं।

यद्यपि, प्रतिवर्ष आषाढ़ के प्रथम दिन आयोजित होने वाले रामगढ़ महोत्सव, में शास्त्रीय आयोजनों के साथ–साथ स्थानीय जनजातीय कलाकारों द्वारा पारंपरिक नृत्य और संगीत प्रस्तुत किया जाता है। यह महोत्सव शास्त्रीय; कालिदास की परंपरा और लोक जनजातीय परंपरा का एक अनूठा संगम है। यह आयोजन छत्तीसगढ़ शासन के संस्कृति विभाग और सरगुजा जिला प्रशासन के संयुक्त तत्वावधान में रामगढ़ ;उदयपुर विकासखंडद्ध की पहाड़ी की तलहटी और सीताबेंगरा

Online ISSN: 3048-667X
CODEN (CAS, USA): JRLAB4
Impact Factor: 3.66

नाट्यशाला के निकट किया जाता है।देश–विदेश से आए संस्कृत, हिंदी और इतिहास के शीर्ष विद्वान, शोधकर्ता और कालिदास–साहित्य के विशेषज्ञ यहाँ एकत्र होते हैं। कालिदास के काव्य मेघदूत में रामगिरि की पहचान मौर्यकालीन नाट्यशाला जोगीमारा के शिलालेख और प्राचीन भारतीय रंगमंच पर नए शोध पत्र प्रस्तुत किए जाते हैं।

इस महोत्सव में सरगुजा अंचल की उरांव, गोंड और कंवर जनजातियों के पारंपरिक लोक नृत्यों जैसे. कर्मा, सरहुल, शैला और सुआ नृत्य का प्रदर्शन होता है। यह महोत्सव यह सिद्ध करता है कि रामगढ़ केवल संस्कृत शास्त्रीय साहित्य का ही नहीं बल्कि छत्तीसगढ़ी वाचिक परंपरा और जनजातीय लोक.जीवन का भी केंद्र है। जिस सीताबेंगरा गुफा में ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी ,मौर्य काल में नाटकों और उत्सवों का मंचन होता था उसी स्थल पर आज भी सांस्कृतिक महोत्सव का आयोजन होना भारत की जीवित कला.परंपरा का अद्‌भुत उदाहरण है। इस महोत्सव के माध्यम से पुरातत्व विभाग और सरकार का ध्यान रामगढ़ की गुफाओं सीताबेंगराए जोगीमाराए हाथीपोल के संरक्षण और बुनियादी सुविधाओं के विकास पर केंद्रित होता है। यद्यपि यह राज्य स्तरीय बड़ा आयोजन है लेकिन इसे उज्जैन के कालिदास समारोह की तर्ज पर और अधिक अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाने की आवश्यकता है।

रामगढ़ की पुरातात्विक संपदा ऐतिहासिक दृष्टिकोण से जितनी समृद्ध है वर्तमान में इसके संरक्षण की स्थिति उतनी ही चिंताजनक बनी हुई है। जोगीमारा और सीताबेंगरा गुफाओं में आने वाले कुछ पर्यटकों द्वारा प्राचीन दीवारों पर नाम लिखना स्क्रैच करना या रासायनिक रंगों से छेड़छाड़ करना सबसे बड़ा संकट बन चुका है। रामगढ़ महोत्सव और धार्मिक अवसरों पर जुटने वाली भीड़ के कारण इस संवेदनशील प्राकृतिक क्षेत्र में प्लास्टिक और अपशिष्ट जमा हो जाता है जिससे गुफाओं का प्राकृतिक वातावरण प्रभावित होता है। वर्षा ऋतु के दौरान पहाड़ी से गुफा की दीवारों में होने वाले जल के रिसाव के कारण जोगीमारा गुफा के चूने से बने प्राचीन भित्ति–चित्र धीरे–धीरे धुंधले हो रहे हैं और उखड़ रहे हैं। मौसम के अत्यधिक उतार–चढ़ाव और धूप–हवा के सीधे संपर्क के कारण पत्थरों की परतों का क्षरण हो रहा है। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण या राज्य पुरातत्व विभाग की ओर से इस स्थल पर पर्याप्त सुरक्षा गार्ड और निगरानी तंत्र का अभाव रहा है। गुफाओं के भीतर प्रकाश और वायु.संचार की आधुनिक वैज्ञानिक व्यवस्था न होने से भी चित्रों की उम्र कम हो रही है।

जोगीमारा के प्राचीन भित्ति–चित्रों को बचाने के लिए विशेषज्ञों द्वारा और पारदर्शी सुरक्षात्मक परत का प्रयोग किया जाना चाहिए। पहाड़ी के ऊपरी हिस्सों पर रासायनिक और जैविक तकनीकों से वाटरप्रूफिंग की जाए ताकि वर्षा का पानी गुफा के अंदर न रिसे। गुफाओं के संवेदनशील हिस्सों में एक समय में प्रवेश करने वाले पर्यटकों की संख्या सीमित की जाए। शिलालेखों और भित्ति–चित्रों वाली दीवारों के आगे पारदर्शी ग्लास या मजबूत सुरक्षा बैरियर लगाए जाएं ताकि पर्यटक उन्हें केवल देख सकें स्पर्श न कर सकें। सरगुजा की स्थानीय जनजातियों उरांवए गोंडए कंवर को विरासत मित्र के रूप में जोड़ा जाए। स्थानीय गाइडों को इस स्थल के पुरातात्विक महत्व का वैज्ञानिक प्रशिक्षण दिया जाए ताकि वे पर्यटकों को जागरूक कर सकें।

Online ISSN: 3048-667X
CODEN (CAS, USA): JRLAB4
Impact Factor: 3.66

निष्कर्ष . रामगढ़ की पहाड़ी केवल सरगुजा अंचल की एक प्राकृतिक या भौगोलिक संरचना मात्र नहीं है बल्कि यह भारत के समृद्ध इतिहासए कला, साहित्यए और लोक–संस्कृति का एक अमूल्य दस्तावेज़ है। ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी में निर्मित सीताबेंगरा गुफा यह सिद्ध करती है कि भारत में ईसा से कई शताब्दियों पूर्व भरतमुनि के नाट्यशास्त्र के सिद्धांतों पर आधारित वैज्ञानिक रंगशालाओं का निर्माण होता था। जोगीमारा गुफा के भित्ति–चित्र भारतीय चित्रकला के इतिहास में अजंता से भी प्राचीन साक्ष्य प्रस्तुत करते हैं। इसमें अंकित ब्राह्मी लिपि के अभिलेख लौकिक प्रेम और कला–साधना के प्राचीनतम लिखित प्रमाण हैं। महाकवि कालिदास की रचना मेघदूतम में वर्णित रामगिरि का इस पहाड़ी से सीधा संबंध स्थापित होना और रामायणकालीन जनश्रुतियों का इससे जुड़ना इसे उच्च–शास्त्रीय साहित्य और पौराणिक परंपरा का संधि.स्थल बनाता है। वर्तमान में अनियंत्रित पर्यटन प्राकृतिक क्षरण और जल रिसाव जैसी चुनौतियाँ इस अनूठी धरोहर के अस्तित्व पर संकट उत्पन्न कर रही हैं।रामगढ़ की पहाड़ी अतीत और वर्तमान को जोड़ने वाला एक ऐसा जीवंत सेतु है जिसका गहन अध्ययन और संरक्षण भारतीय इतिहास की कई और कड़ियों को स्पष्ट करने में सहायक सिद्ध होगा।

संदर्भ सूची –

हीरालाल, रायबहादुरए (1926) मध्य प्रदेश का इतिहास एवं पुरातत्व, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।

मिश्र, केदारनाथ, (1985) कालिदास और उनका रामगिरि ;सरगुजा का रामगढ़द्ध, मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल।

शुक्ल, एच. एल. (1998) छत्तीसगढ़ का सांस्कृतिक इतिहास, बी. आर. पब्लिशिंग कॉर्पोरेशन, दिल्ली।

गुप्त, परमेश्वरी लाल (1975) भारतीय वास्तुकला एवं शैलचित्रए विश्वविद्यालय प्रकाशनए वाराणसी।

छत्तीसगढ़ संस्कृति विभाग (2018) रामगढ़ की धरोहर एवं रामगढ़ महोत्सव, शोध पत्रिका, रायपुर।